International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 88-90

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य में संघर्ष के प्रतीक

सविता

एम०ए०, हिन्दी (नेट), एम०एड०, स्वतन्त्र शोधार्थी, हिसार, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

''खूँटियों पर टँगे लोग'' सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का अद्भुत काव्य–संग्रह है जिसमें जीवन में नियति और स्थिति को स्वीकार करने का दंश व्यापक रूप में फैला है। व्यक्ति के जीवन की यह पीड़ा उसके जीवन का अंग बन चुकी है जिसे मानव को चाह कर भी निजात नहीं मिल पा रही है।

कवि के आत्म की पीड़ा पहले समाज तक जाती है और फिर परावर्तित हो, समाज से कवि के आत्म तक आती है। समस्त कविताओं में कहीं न कहीं क्रान्ति, विद्रोह और विरोध का संदेष दृष्टिगोचर होता है व साथ–साथ निराशावाद के साथ आशावादी बनने के तथ्य भी परिलक्षित होते हैं।

विशेषतौर पर साहित्यिक क्षेत्र मे, काव्य में प्रतीकात्मक अंशों का ज्यादा समावेश होता है। इसी प्रतीकात्मकता को अपने काव्य–संग्रह में अपना कर सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने मानव जीवन की अनुभूतियों को कृत्रिम उपमानों के माध्यम से अलंकृत कर बेजोड़ नमूना प्रस्तुत किया है। अनेक कवियों ने अपने–अपने स्तर पर उपमानों का वांछित प्रयोग किया है।

लेकिन सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपमान आम व्यक्ति के जीवन से जुड़े कोट, स्वेटर, जूते इत्यादि आदि हैं जो मानवीय जीवन की तमाम अनुभूतियों को स्वयं में अंगीकृत किये हुए है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के अनुसार, कोट, दस्ताने, स्वेटर, जूते, सब युग की चुनौतियों से टकरा कर, क्रान्ति, विद्रोह और विरोध से पूर्णतया जुड़ चुके हैं। प्रतीकों व बिम्बों के माध्यम से मानव जीवन की अनुभूतियों को प्रस्तुत करने का ऐसा अद्भुत प्रयास अपने आप में सराहनीय हैं।

'कोट' कविता में व्यक्ति के 'कोट' की गुहार कुछ इसी रूप में उभर कर सामने आई है। 'कोट' की विडंबना यही है कि वह एक अरसे से खूँटी पर टँगा है लेकिन उसे पहनकर सार्थकता देने वाला उसके पास नहीं है जिसके कारण वह कोई आकार प्राप्त नहीं कर पा रहा अर्थात् उसके वजूद पर प्रश्नचिह्न लग चुका है। अकेलेपन का दंश वह कदापि सहन नहीं कर पा रहा है। उसे पहन कर अस्तित्व प्रदान करने वाला, उसे हर मात्रा से मुक्त कर, अकेले अपने हाल पर छोड़ गया है। 'कोट' कविता में प्रतीक 'कोट' की संवेदना मानवीय संवेदनाओं को परिपुष्ट करती प्रतीत होती है :–

''मुझे यह मुक्ति नहीं चाहिए।
अपने लिए आजाद हो जाने से बेहतर है
अपनों के लिए गुलाम बने रहना।''
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, 'कोट', पृ.सं.– 20)

'कोट' के माध्यम से एक मनुष्य की अंदरूनी टीस उभर कर सामने आई है। एकांत रहने की चुभन आज व्यक्ति को अंदर से छलनी कर रही है। अपने–अपनों से मुँह मोड़ चुके और आपसी सहयोग व अपनेपन का अभाव मानव जीवन का अहम् हिस्सा बन गया है। इस अकेलेपन के दंश से ज्यादा अच्छी तो संघर्ष के दौरान मिलने वाली चोट ही थी जिसमें सहयोग व अपनेपन का अहसास तो रहा।

इसी प्रकार प्रतीकार्थ रूप में 'दस्ताने' का प्रयोग भी मानवीय संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति करता है। हाथ व दस्ताने के रिश्ते को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता। जो तकलीफ हाथ ने सहन की है वो दस्ताने से भी दूर होकर नहीं गुजरी है। उंगलियों की जलन का भान उन दस्तानों को भी है लेकिन ऊँचा तबका व शोषक वर्ग उन दस्तानों को बेजान समझने की भूल कर बैठता है। सवेश्वरदयाल सक्सेना की पंक्तियाँ बेजान में जान का अहसास कराती प्रतीत होती हैं:–

'अन्याय और यातना की सीमा
जब पार हो जाती है
तो बेजान में ही सबसे पहले
जान आती है।''
(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, 'दस्ताने', पृ.सं.–30)

तानाशाही करने वाले, खून चूसने वाले शोषकों को हमेशा सबसे बड़ा खतरा दस्तानों से ही होता है। कब शोषित वर्ग के हाथ की कुदाल, मशाल बन जाए, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। अन्याय ही विद्रोह को जन्म देता है जो बड़ी से बड़ी ताकत को धराशायी कर सकता है।

प्रतीकात्मक रूप में 'जूते' नामक कविता में जूते को भी कवि ने प्रेरणास्पद के तौर पर दर्शाया गया है और मानव को असंख्य कठिनाइयों के चलते निरन्तर गतिशील रहने की प्रेरणा दी है। जूते के माध्यम से मनुष्य को हार न मान कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने की प्रेरणा दी है। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी प्रेरणा भाव को इंगित करती हैं :–

जूते से पूछता हूँ
'आगे क्यों नहीं चलते?'
जूता पलटकर जवाब देता है–
'मैं अब भी तैयार हूँ,
यदि तुम चलो!'
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, 'पिछड़ा आदमी', पृ.सं. 36)

प्रस्तुत पंक्तियों में इस तथ्य का भी समावेश है कि जब तक निराश मानव स्वयं कठिन परिस्थिति से उभर कर आगे बढ़ने को तत्पर नहीं होगा तब तक दूसरे का सहयोग नगण्य है अर्थात् कदम मुसाफिर का तभी साथ देंगी, जब वह स्वयं पैर उठाने को तत्पर हो।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की कविता ''उड़चल हारिल'' की पंक्तियाँ भी हारिल पक्षी के माध्यम से इसी नैराष्य भाव से आशा भाव का संदेश देती हैं :–

''उड़ चल हारिल, लिए हाथ में वही अकेला, ओछा तिनका।
.....
शक्ति तेरे हाथों में– छूट न जाये यह चाह सृजन कीय
शक्ति रहे तेरे हाथों में – रूक न जाये यह गति जीवन की।''
(सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', ''उड़चन हारिल'',पृ.सं.15)

अतः मानव को अपने जीवन में आने को कुछ अच्छे कर्म कर सार्थक करने का प्रयास करना चाहिए।
'पिछड़ा आदमी' कविता में शोषित व्यक्ति व कार्य के प्रति पूर्णरूप से समर्पित व्यक्ति को हमेशा त्याग हेतु तत्पर दिखाया गया है। ऐसा व्यक्ति अपने सुख भाग को कम कर जीवित रहता है व अंत में सबसे पहले गोली खाने से भी गुरेज नहीं करता अर्थात गरीब के हिस्से में सदैव भूखा रहना लिखा है। वह जीता भी भूखा है और मरता भी भूखा है। क्षुधा पीडित व्यक्ति अगर जीने का हौंसला रखता है तो मरना उसके लिए कौन–सा मुश्किल है। पिछड़ा आदमी जीवित रहते कुछ पाने में पिछड़ा है लेकिन अंतिम समय में वही सबसे पहले गोली खाने में अग्रणी ळें
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की पंक्तियाँ इसी सत्य को उद्घाटित करती हैं :–

''जब सब खाने पर टूटते थे,
वह अलग बैठा ढूँढता रहता था
––––––––––––––––
लेकिन जब गोली चली,
तब सबसे पहले वही मारा गया।''
(सर्वेवरदयाल सक्सेना,' पिछड़ा आदमी', पृ.सं.–36)

प्रस्तुत पंक्तियाँ पिछड़े आदमी की उस दशा की ओर संकेत करती हैं जो उसे चाह कर भी, समाज में समान स्तर पर आने से रोके हुए हैं। इसी समानता भाव को लेकर रामधारी सिंह दिनकर की पंक्तियाँ जीवंत हो उठी हैं।

''शांति नही तब तक जब तक
सुख भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।''
(रामधारी सिंह दिनकर, ''कुरूक्षेत्र'', 1946)

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता 'पोस्टमार्टम की रिपोर्ट' की पंक्तियाँ भी क्षुधार्त मानव की पीड़ा को भली–भांति अभिव्यक्त करती हैं:–

''गोली खाकर
एक के मुँह से निकला–
'राम'।
दूसरे के मुँह से निकला–
'माओ।'
लेकिन तीसरे के मुँह से निकला–
'आलू'।
पोस्टमार्टम की रिपोर्ट है
कि पहले दो के पेट भरे हुए थे।''
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना,'पोस्टमार्टम की रिर्पोट', पृ.सं.–37)

प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी तथ्य को उजागर करती है कि जिस व्यक्ति का पेट भरा हो, वहीं अपने ईश्ट को भी मृत्य के समय याद कर सकता है। लेकिन भूखे व्यक्ति की तो भूख ही उसका खुदा है। भूखे पेट तो भजन भी नहीं होता और ये क्षुधा से पीड़ित व्यक्ति से ज्यादा कोई नहीं जान सकता।
'रिश्ते' नामक कविता में कपड़ों को प्रतीकार्थ बनाकर मानवीय रिश्तों में समभाव स्थापित किया गया है कि किस प्रकार, किसी व्यक्ति की पीड़ा, समान पीड़ित व्यक्ति हेतु असहनीय होती है।

''खुद कपड़े न पहने,
दूसरों को कपड़े पहने न देखना।'
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, 'रिश्ते' पृ.सं.–38)

प्रस्तुत पंक्तियों के अनुसार, दो अभावपूर्ण व विपरीत परिस्थितियों वाले मनुष्यों का समान परिस्थिति अनुभव करना है व समान परिस्थिति से गुजरने वाले मनुष्य ही मिलकर क्रान्ति का परचम लहरा सकते हैं। जो व्यक्ति उनकी परिस्थिति से ऊपर हैं, वह चाह कर भी दोनों की पीड़ा अनुभव नहीं कर सकता।
'मृत्युदंड' कविता के अंतर्गत मुख्य भाव जहरीले व्यक्ति के जहर को स्वयं के आत्मविश्वास के बल पर खत्म करने की प्ररेणा दी गई है। आज जहर साँप से ज्यादा व्यक्ति में है। इसी तथ्य से सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की कविता ''साँप'' का भान हो उठता है जिसमें उन्होंने महानगरीय संवेदनहीन जीवन को दर्शाता है। उनके अनुसार, भौतिकता की होड़ में, नगर में बसे मानव में आज जहर व्यापक रूप से फैल चुका है। व्यंग्यात्मक तौर पर व्यक्ति से प्रश्न भी किया गया है :–

''साँप
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।''
एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डँसना–
विश कहाँ पाया?
(सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', ''साँप'', पृ.सं.–14)

प्रौढ़ शिक्षा–2 के अनुसार, कवि ने शिक्षा के बेहतरीन सिद्धांत से समाज को बेहतर दिशा देने का अथक प्रयास किया है कि किस प्रकार एक शिक्षित दस से पता नहीं, कितने दस गुना शिक्षित बना सकता है। एक शिक्षित कैसे समाज में शिक्षा रूपी प्रकाश की लौ जलाकर कैसे समाज रूपी मकान में उजाला कर सकता है जिससे सभी को सही–गलत काअंतर पता लगे व लोकतंत्र की नैया डूबने से बचाई जा सके। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की प्रौढ़ शिक्षा–2 में इसी लोकतंत्र संकट की समस्या की ओर संकेत कर शिक्षितों को जागरूक किया हैं :–

''कोयला ही कोयला अभी चारों तरफ फैला है
देश का नहीं, देश के कर्णधारों का मन मैला है।''
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, 'प्रौढ़ शिक्षा–2', पृ.सं.–62)

इसी तथ्य की परिपुश्टि रघुवीर सहाय की कविता 'लोकतंत्र का संकट' में होती है कि व्यवस्था संचालक कर्तव्यों का महत्व न समझ कर अपना लाभ शासन व्यवस्था के बिगड़ने में ही मानते हैं। यही लोकतंत्र का मुख्य संकट है।

''पुरूश जो सोच नहीं पा रहे
किंतु अपने पदों पर आसीन है और चुप हैं
––––––––––––––––––––––––
उसी में उनका हित है।''
(रघुवीर सहाय, 'लोकतंत्र का संकट', पृ.सं.–63)

वास्तविक रूप से, शिक्षित जन–समुदाय के सहयोग से ही लोकतंत्र की काफी सीमा तक रक्षा की जा सकती है।
इसी प्रकार मानव जीवन की अनुभूतियों के अंतर्गत 'जड़ें' नामक कविता यही संदेश देती है कि जो व्यक्ति जीवन की तमाम कठिनाइयों को पार करता हुआ भी, अपने जीवन में जड़ों की भाँति मजबूत बना रहता है, वह निःसंदेह सफलता का मार्ग प्रशस्त करेगा। ये जड़ें व्यक्ति को आधार के तौर पर स्थिरता देकर गतिशीलता देती हैं।
प्रस्तुत पंक्तियों में इसी भाव का समावेश है–

''आकाश की कितनी
ऊँचाई हमने नापी है,
––––––––––
जलहीन, सूखी, पथरीली,
जमीन पर खड़ा रहकर भी
जो हरा है,
उसी की जड़ें गहरी हैं।''
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, 'जड़ें', पृं.सं.–103)

जिस व्यक्ति ने जीवन में सुख–दुख से समान रूप से निर्वाह करते हुए स्वयं को विचलित नहीं होने दिया व साथ–साथ संघर्शरत रहते हुए आकाश की ऊँचाई व धरती पर दूर–दूर तक अपनी पहुंच बनाई, उसी की जड़ें वास्तव में गहरी हैं व वह जीवन के तमाम अनुभव पूर्ण रूप से आत्मसात कर चुका है।
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की भाषा में दोहरी प्रवृति पाई जाती है। इनकी काव्य भाषा लोक से आकर, सम्भ्रान्त भाषा में कुछ इस प्रकार मिश्रित हो चुकी है जिसमें खुदरापन व चिकनापन पहचान पाना कठिन है। इनकी मानवीय संवेदना के क्षेत्र में गहरी पैठ है जो देखते ही बनती है। 'खूँटियों पर टँगे लोग' में वे मानवीय जीवन की हर कड़वी– मीठी अनुभूति को नजदीक से छू कर निकले है। इनके काव्य संग्रह में मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को कभी प्रतीकों के माध्यम से, कभी मानवीय भावों की प्रेरक शक्ति के माध्यम से अभिव्यक्ति देने का सफल प्रयास किया है। समाज के प्रत्येक ऊँचे तबके से लेकर नीचे तबके तक के जीवन को अपने शब्दों के माध्यम से रेखांकित करने का अनोखा प्रयास किया है।

संदर्भ सूची :–

1. खूँटियों पर टँगे लोग : सर्वेश्वरदयालय सक्सेनाय राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. ''कुरूक्षेत्र'' : रामधारी सिंह दिनक यः राजपाल प्रकाशन, 2013.
3. ''उड़चल हारिल'' : सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' य समकालीन हिन्दी कविता, प्रकाशन विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
4. साँप : सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' य समकालीन हिन्दी कविता, प्रकाशन विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
5. ''लोकतन्त्र का संकट'' रू रघुवीर सहाय य समकालीन हिन्दी कविता, प्रकाशन विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।